# v..kk HkkÅ lkBs th ds miU;klk esa fonksgh ukf;dk

Mk- v"kksd rqdkjke tk/ko

*सहयोगी प्राध्यापक* हिन्दी विभाग,

कै. बाबासाहेब दे" ामुख गोरठेकर महाविद्यालय, उमरी जि. नांदेड, महाराश्ट्र

## iLrkouk

अण्णा भाऊ साठे बीसवी भाताब्दी में मराठी साहित्य के सर्वश्रेठ उपन्यासकार होते हुए भी, महज दलित वर्ग के मातंग जाति में जन्म हुआ हैं इसलिए उनको वह धरोहर नहीं मिली जो प्रेमचंद को हिन्दी साहित्य में, भोक्सपियर को अंग्रेजी साहित्य में मिल गयी. इनका जीवन करुन महाकाव्य से कम नहीं हैं। ऊनकी साहित्यिक प्रवृत्ती मूलतः विद्रही हैं। इसी कारण उनके उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से विद्रोह दृश्टिगोचर होता हैं। भरतीय समाज में स्त्री सदियों से सबसे अधिक भाोशित रही हैं। भाायद इसी कारण अण्णा भाऊ साठे जी ने स्त्री को अपने उपन्यासों में नायिका के रुप में स्थान दिया हैं, और उनके विद्रोह को चित्रित किया हैं। हम सुनते आरहे हैं कि, भारत में प्राचीन काल से स्त्रियों पर अनगिनत अत्याचार हुए हैं और उनका भाोशण किया गया हैं। समय समय पर उनका रुप बदलते रहे हैं। जैसे : कभी देवी माना गया, या फिर भोग्य के रुप में उसका भाोशण किया गया।^^सामाजिक परिवे" ा की भिन्नता किसी साहित्यकार की विचारधारा को स्थिर करती हैं। जिस साहित्यकार ने स्वंय भाोशण , उपेक्षा अनुभव कि हो उसके भाोशित या उपेक्षित पात्र इन सभी चींजों का पुरजोर विरोध करेंगें।**1

**विद्रोह भाब्द का अर्थ :**

^^विद्रोह भाब्द का पर्यायी भाब्द बगावत ,या आदे" ा का इनकार हैं। यह एक स्थापित प्राधिकरण के आदे" ा के खिलाफ खुले प्रतिरोध को संदर्भित करता हैं।**2 कोई विद्रोह किसी उत्पीडन की स्थिति और अस्वीकृती की भावना से उत्पन्न होता हैं।ओ" ाो कहते हैं– विद्रोह का अर्थ हैं– समाज से, संस्कार से, भाास्त्र से सिंध्दात से, भाब्द से मुक्ती।

अनादि काल से स्त्री भाोशण का f" ाकार बनती जा रही हैं।लिंग पर आधारित, विशमता पर केन्द्रित पुरुश प्रधान संस्कृति विद्यमान हैं। पुंरुशों ने सभी आधिकार आपने पास रख कर, स्त्री को तुच्छ मानने लगे। f" ाक्षा तथा सामाजिक जागृति के कारण नारी उस पर होनेवाले आन्याय के विरोध में विद्रोह कर उठी हैं। अण्णा भाऊ साठे जी ने भी अपने उपन्यासों मे नारी और पुरुश दोनों को भी समानता प्रदान की हैं। अन्याय का विरोध करने वाली भाुरवीर नायिका का भी चित्रन किया हैं। उनकी नायिका परिस्थिति के साथ समझोता न करते हुए उन्होंने संकट का सामना कर अन्याय का सफाया

किया हैं। तकदीर के आगे घूटने न टेकने वाली, नायिकाओं को प्रतिकार करनेवाली नारी दिखाया हैं। जैसे : 'माकडी चा माळ' में 'दूर्गा', 'चित्रा' उपन्यास में 'चित्रा', 'वारणेच्या खो–यात' में 'मंगला', 'चंदन' में 'चंदन'का आन्याय के खिलाफ विद्रोह करते हैं।

'चित्रा' एक नायिका प्रधान उपन्यास हैं। इस उपन्यास में अण्णा भाऊ साठे जी ने इन्सान कैसे कमजोर एंव अपने नजदीकि रि" तों का फायदा लेते हैं। और नारी खुद का बचाव कैसे करती यह स्पश्ट किया हैं। 'सोना' और 'चित्रा' के मामा का नाम हैं कृश्णा। सोना को पिता न होने के कारण उसकी तथा चित्रा की भाादी की जिम्मेदारी उसके मामा कृश्णा पर रहती हैं। किंतु वह सोना को मुबंई में भाादी के बहाने लेजाकर उससे वे" या व्यावसाय करने पर मजबूर करता हैं। वही समय जब चित्रा पर आजाता हैं, तो चित्रा संकट का सामना करने के लिए कहती हैं। जैसेः **वह एकदम रुक गयी 'फिर अब क्या करेगें ?ि चत्रा असमंजस मे बोली.

'कुछ भी करने नहीं आता'

'क्यो ? हम वापिस जायेगें'

'कहॉ जायेगें कहती हो ?'

'अपने मॉ के पास'

'किस लिए ?'

पहले जैंसें काम करेगें और मॉ को संभालेगें। इज्जत से रहेगें। मॉ ने आते समय ही मुझे कहा था।

क्या बोली मॉ ? सोनाने ऑखे पुछते हुए कहा

'मॉ बोली, चित्रा भाादी करके खु" ा रहना और जान से भी ज्यादा इज्जत को महत्व देना'।[3**]

इस तरह से चित्रा स्वंय के साथ साथ अपने बहन सोना को भी इस दल दल भरे कीचड से मुक्ति करना चाहती हैं। ^^धोखा मत खा और मुझ जैसी मत बन। रोना धोना अपनाकर डरपोक मत बन कुछ ऐसा कर कि,दूसरों को तुझसे डर लगने लगे।**[4] नीति और प्रतिश्ठा की भ्रामक कल्पनाओं को ठुकरानेवाली, मॉ के भाब्दों को मूल्यवान मानकर प्राणों को दाव पर लगाने वाली संकटो का मुकाबला करने वाली, ध्येयवादी नारी हैं।

वारणेच्या खो–यात^ इस उपन्यास की नायिका मंगला अपने भाई हंबीरराव के इच्छा के विरुद्व में एक स्वंतत्र सेनानी हिन्दूराव के साथ प्रेम करती हैं , और विवाह भी कर लेती हैं। अर्थात् वह समाज के रिती रिवाजों के खिलाफ विद्रोह करती है, और अपने मर्जी से जिसे वह प्रेम करती हैं उससे भाादी कर लेती हैं। उसके परिणामों को बिल्कूल ही नहीं डरती हैं, समय आने पर मौत को भी गले लगा लेती है, किंतु अपने मर्जी से जीवन जी लेती है। हंबीर अपने बहन के साथ साथ हिंदूराव का भी विरोध करता हैं। इसी विराध के कारण दोनों में हाथा पाई होती हैं। इसमें हबीर राव को गोली लग जाती हैं। तब मंगला कहती हैं–''वह मेरा भाई हैं मुझे मायके ले जाने वाला हैं, उसे जीने दो।''[5] इस प्रकार

मंगला की तरह भारतीय नारियो की विडबंना हैं कि, उसे एक साथ कई रि" तें निभाने पडते हैं।आगे चलकर हंबीर उसकी बहन मंगला तथा हिन्दूराव की हात्या कर देता हैं। अण्णा भाऊ साठे जी यही स्पश्ट करना चाहते हैं कि नायिका सुंदरता के साथ साथ धैर्यवान तथा लडाकू वृती की भी हैं।

'आवडी' इस उपन्यास की नायिका आवडी का भी यही हाल हैं। उसका भाई नागु चौगुला उसके बहन की भाादी एक आध पागल से करना चाहता हैं। किंतु आवडी आपने भाई के विरोध में जाकर निम्न जाती से जुडा हुआ उसका प्रेमी धनाजी रामोसी से कर लेती हैं। उपन्यासकार जो सदियों से चली आरही परम्परा का विरोध करना चाहते हैं, स्त्री को अपने मर्जी से भाादी करने के बजाए अपने घरवालो के मर्जी के आनूसार भाादी करनी पडती है, इसका वह विरोध करना चाहते है। क्यो कि नारी अपना जीवन साथी खुद चूनना चाहती है, इन्सान बन कर जीना चाहती हैं। इसीलिए साठेजी अपने उपन्यासों में नायिकाओं को बगावत करते हुए दिखाते हैं।

अण्णा भाऊ साठे जी ने स्त्री के भील को बहुत ही महत्व दिया हैं। उनके उपन्यासों में जहॉ जहॉ बलात्कार के प्रसंगों का चित्रण किया हैं, वहॉ वहॉ बडी चतुराई से वर्णन किया हैं। भील को जान से भी ज्यादा महत्व दिया हैं। जैसे 'चंदन' उपन्यास की चंपा , चंदन की इज्जत बचाने के लिए अपनी जान की परवा न करते हुए कहती हैं ^^जो इज्जत हीरो की किमंत जैसी हो उस पर ही डाका पडने का डर होता हैं, कौडी कोई चुराता नहीं मैं तुम्हारी इज्जत पर जान न्योछावर कर दूॅगी।**6 इनके नारी पात्र सिधे साधे मगर सन्मानजनक, भीलपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं। यद्यपि परिस्थिति के कारण असहाय और निराधार हैं, लेकिन वह मनसे दुर्बल नहीं हैं। समय आने पर अपने प्राणों की परवाह किए बिना वह संकट के साथ लडती है।

^चंदन* उपन्यास की नायिका चंदन समय का ि" ाकार होने के बावजूद हार नहीं मानती हैं। विवाह के बाद यौन आवस्था में विधवा का जीवन जीना पडता हैं। पति मर जाने के बाद वह आपने बेटे राजा के साथ जीवन यापन करती हैं, किंतु समाज के भेडिए उसे जीवन जीने नहीं देते हैं। इन भेडियों का सामना करते करते एक दिन दयाराम के चेहरे पर एसिड फेक देती हैं। परिणाम स्वरुप उसे जेल भी जाना पडता हैं। यहॉ उपन्यासकार यह स्पश्ट करना चाहते हैं कि, नारी कोई भी अन्याय सहन कर सकती हैं, मगर अपने भील के साथ खिलवाड कभी भी सह नहीं सकती वह भोरनी की तरह ि" ाकार करना जानती हैं, अर्थात वह विद्रोह करना चाहती हैं। पुरुशों के प्रति 'चंपा' अपना दिल खोलती हैं, और वह कहती हैं, ^^औरत का जन्म ही बुरा होता हैं, उसे अपना मन काबू में रख कर क्या फायदा उस पर जो दिल आते हैं उनको कौन संभालेंगा ? पुरुशों की जाती ही बडी निर्लज्ज हैं। जैसे कोई चींज गुड की भेली से चिपका हो।**7 इस तरह से अण्णा भाऊ साठे के नारी पात्रों को पुरुशों का विरोध करती हैं, पर अपने पति पर सब कुछ न्यौछावर कर देती हैं।

वैजयंता' उपन्यास की नायिका वैजयंता अपनी मॉ के इच्छा का सम्मान करते हुए तमा" ाा में नाचने के लिए तैयार होती हैं। लोगो की नजर वैजयंता के साथ साथ उस पर भी पडती हैं। यह समझा ते हुए तमा" ाा का मालिक चंदुलाल उसे कहता हैं। ^^लोग तुम्हारे लिए आते हैं, गाने के लिए नहीं , वैजयंता उस मालिक को सुनाती हैं। तमा" ाा यांनी मेरे देह का नग्न प्रद" ान नहीं हैं। जनता का अधिकार मेरी कला पर हैं, मेरे भारीर पर नहीं...मैं यहॉ कसाबिन बनकर नहीं आती तमा" ाा में यदि कोई गलती हुयी तो जनता को आधिकार हैं कि, वह मुझे फॉसी चढा दे।**8 वैजयंता महज एक कलाकार हैं, और कलाकार एक कलाकार ही होता हैं, वह किसी के हवस का f" ाकार नहीं बन सकता। इस तरह से वैजयंता अपने तमा" ाा मालिक से भी विरोध करती हैं। यह बताना चाहती हैं कि, जनता का अधिकार मेरे कला पर हैं, मेरे भारीर पर नहीं।

Lkkjk"k %

अण्णा भाऊ साठे जी की साहित्यिक प्रवृति मूलतः विद्रोही हैं। दलित, झोपडपट्टी, आदिनिवासियों, घूमंतू, जाति के वर्ग से जुडी महिलाओं की चेतना संघर्श" ाील हैं। प्रेम की प्राप्ति के लिए अपना परिवार, जाति, और समाज से विद्रोह करती हैं। पुरुशों का विद्रोह करते हुए भी वह अपने पति को बहुत ही सम्मान देतें हैं। कामुकता की और वह कभी भी झूकती नहीं हैं। गरीब होने के बावजूद भी वह दरिद्री से झूजनेवाली हैं। उपन्यासकार ने तत्कालिन समाज में व्याप्त दलितो की समस्याओं का अंकन किया हैं। उनकी नायिकाऍ उदात्त गुणों की खान हैं। जो एक भारतीय संस्कृति की परिचायक हैं। स्त्री केवल भोग की वस्तु के रुप में उभरकर सामने आति थी किन्तु, अण्णा भाऊ साठेजी ने स्त्रियों के प्रति आदर भाव निर्माण कर जनमानस में उसे सर्वोच्च स्थान पर बिठाने की सफल चेश्टा की हैं।

lanHkZ %

1. प्रेमचंद तथा अण्णा भाऊ साठे के उपन्यासों में स्त्री विम" f, डॉ. गोरख थोरात, अन्नपूर्णा प्रका" ान,कानपूर, प्र.वर्श 2015, पृ. सं. 113.

2. www.google.com ,विकिपीडिया

3.चित्रा, अण्णा भाऊ साठे, श्रमिक प्रतिश्ठान,कोल्हापुर,प्रथम संस्करण, पृ.सं 51–52

(ती एकदम थांबली ' मग आता काय करायच ?' चित्रा गोधंळून म्हणाली.

'काहीच करता येत नाही'

' का आपण परत जाऊ या'

' कुठे जाऊ म्हणतेस ?'

' आपल्या आईकडे'

' क" ाला ?'

काम करु पहिल्यासारखं. रोजगार करुन आईला पोसू , अब्रु नं जगू.

आई न मला येते वेळी सांगितल आहे.

''काय सांगितल आईनं ?'' सोनाने डोळे पुसत विचारले.

आई म्हणाली , चित्रा! लग्न करुन आनंदी रहा आणि जीवाच्या मोलानं अब्रु जप'')

4.चित्रा, अण्णा भाऊ साठे.

(फसू नको आणि माझ्या सारखी होऊन बसू नको मूळू मूळू भिऊन वागू नको, तर असं कर की तुझीच भिती दूस–याला वाटू दे. )

5. वारणेच्या खे–यात, ,अण्णा भाऊ साठे, पृ. सं. 114

(तो माझा मुरारी आहे, त्याला जगु द्या)

6.चंदन, अण्णा भाऊ साठे पृ. सं. 32

7.वही, अण्णा भाऊ साठे पृ. सं. 09

8.वैजयंता, अण्णा भाऊ साठे पृ. सं. 76

(तमा" ा म्हणजे माझ्या देहाचे नग्न प्रद" न नव्हे, जनतेची मालकी माझ्या कलेवर आहे, माझ्या भारीरावर नाही...

मी येथे कसाबीन म्हणून येत नाही तमा" ात कसुर झाली तर जनतेनी मला फा" ी द्याव. )